क्षत्रियपत्रिका का पुष्प।

॥ भारत-सौभाग्य ॥

भारतेश्वरी श्रीमती महाराणी विक्टोरिया के पचास
वर्ष पर्यन्त राज्य करने के महोत्सव पर
नाटक।

क्षत्रिय कुल भूषण क्षत्रिय पत्रिका सम्पादक
रामदीन सिंह
की अनुमति से साहित्याचार्य सुकवि श्री
अम्बिका दत्त व्यास
द्वारा विरचित।

'खड्ग विलास' प्रेस—बांकीपुर।
बाबू साहब प्रसाद सिंह ने छापकर प्रकाशित किया।
१८८७

IMPE RARY
30.JUN.15

उपहारः ।

कविजन वर्णित कीर्त्तिं, भारतभरणस्य बिभ्रतीभारम् ।
धन्या मान्या माज्ञी, राज्ञी विक्टोरियानाम्नी ॥ १ ॥
विलसतु तत्करकमले, भारतसौभाग्यमेतदऽतिसुखदम् ।
भारतभूवास्तव्यैः, सादरमर्पितमुताऽस्माभिः ॥ २ ॥
भारतसौभाग्यत्वं, मा चिन्तां कामपि गमः ।
सा लालयति यतस्त्वां, राज्ञी श्रीभारतेश्वरी देवी ॥ ३ ॥

क्षत्रियपत्रिका सम्बन्धी सम्पादकौ ।

नाटक के पात्र गण।

आदि में सूत्रधार।

पुरुष		स्त्री
भारत दौर्भाग्य।	...	मूर्खता।
विषय भोग।	...	फूट।
भारत ...	...	शिक्षा।
भारत सौभाग्य।	...	एकता।
प्रताप। ...	...	भारत पताका।
उत्साह। ...	...	अंगरेज़ी पताका।
शिल्प। ...	...	राजभक्ति।
		यन्त्रविद्या।
		उदारता।
		दया।

भारत-सौभाग्य ।

(घण्टी बजने औ हार्मोनियम के साथ नेपथ्य में सङ्गीत होता है)

मल्हार ।

जै जै जै विक्टोरिया रानी । जै० ॥

जासु प्रताप सबै जग जागत सब विधि राजनीति सों सानी । जै० ॥ जा इंगलैण्ड भूमि को कोउ शासन पुनि नहिं कोउ जानी । आज सुखद भारत की भूमिहु ताही को जय धुज फहरानी जै० ॥

(फिर घण्टी बजने पर झट सूत्रधार आता है ।)

सू०—(एक हाथ से सङ्गीत को थमाने की मुद्रा से) बस बस (सामाजिकों की ओर) आज के खेल में प्रस्तावना का काम नहीं, इस को आप सब जानते हैं कि यह नाटक किस प्रसिद्ध अमृतवर्षी कवि ने बनाया है और इस में क्या है (घड़ी देख कर) अब समय हुआ लीला देखिये औ बोलिये महारानी की जय ।

नेपथ्य में से—कौन है रे ? कौन महारानी की जय कहता है ?

सू०—यह मूर्खता जान पड़ती है । हां । वही भोगी (जाता है)

प्रस्तावना ।

प्रथम दृश्य।

स्थान गङ्गा किनारे बालू का पटपर

(जवनिका उठती है--लहंगा पहिरे और वैसी ही भूरी साड़ी ओढ़े गिल्टी के गहनों से लदफद काली सी मूर्खता का प्रवेश)।

मू०—कौन रानी की जय कहता है? अरे जिसने मेरा सत्यानाश किया उस की जय! अब जय ही करना हो तो फर्रुखसियर की जय क्यों नहीं करते जिस का आधा तख्त दाब के मैं पातशाही करती थी, और जिस के समय में दीवान में मैं दरबार में मैं सेना में मैं सर्दार में मैं पयादे में मैं औ पादशाह में मैं थी। रानी रानी क्या बकते हो? तुम्हारी महारानी होगी मेरी तो पूरी बैरन है हा!

ठौर २ में कालिज कीने औ इसकूल बनाये।
गांव गांव मे कै पटसाला लरिका किते पढ़ाये॥
बीसकोस आगिको चरचा जिहिं दरदर नहिं जानी।
सो अब बैठि सिखि सिपाई की लटकी बांचत कहानी॥
पांच सात की जोरनकों जिहिं अंगुरी रगरत बीत्यो।
रेखा बीजगनित कै कै तिन अब मेरो दल जीत्यो॥
अपनिहु भाषा भूलि गये हैं जो उरदू के दासा।
पांच सात भाषनकों पढ़ि कै सो अब करत हुलासा॥
अपनो गौरव भूले हैं जो जवनन दास कहाई।

तिनहिं निरखि फिर इतिहास सम धनेसबकों दियोजगाई ॥
मेरी सखी फूटहू कोऊ दिन निज बस कीनो भारत ।
पै को जानै कहां भटकती सोऊ फिरत है आरत ॥

नेपथ्य में से—प्यारी मूर्खता खड़ी रह० खड़ी रह मैं आती हूं ।

मूर्खता०—आहा फूट आती है ।

फू०—(कन्नौज के ढंग का वेष बनाये आती है औ मूर्खता के गले लगती है)

मू०—कहो सखी तुम्हारे कुशल का हाल कहो ।

फू०—हं: अरे मेरा कुशल: मैं तो तेरे आसरे रहती आई हूं अब इस सटनी शिक्षा ने तुझे भी खदेड़ दिया तो अब भला मैं क्या करूं ? हा !

मैं जय चन्दहिं पैठि किते खल यवन बुलायो ।
नन्द बंस हूं मैंने ही इक धूरि मिलायो ॥
नेक खड्ग चमकाइ जोई गिरिवर चमकावहिं ।
ऐसे छत्रिय वर हू मो ढिग सीस झुकावहिं ॥
पैठि विभीषन हीय लई रावन की लङ्का ।
मोसों बढ़ि कै और कौन तव ह्वै है बङ्का ॥

मू०—सखी सच कहती है । (क्षणमात्र के अनन्तर) अच्छा चलो देखैं तो भारत दौर्भाग्य कहां है । उस को कुछ महिमा जगै तो हमलोगों के भी पौबारह पड़ैं (दोनों जाती हैं)

(पटाक्षेप- स्थान नगर प्रान्त - काले वस्त्र पहने हाथ। छुरा लिये भारत दौर्भाग्य का प्रवेश)

दौ०—छिः! कब हम आवेगा? अरे काबुल वाले भी क्यों नहीं चढ़ाई करते?

ओः इन चीनी और बर्मी को क्या हुआ? हायरे एक महमूद और पैदा होता तो मैं फिर भोलों पर लात देता जाता महमूदने कैसे आनन्द किये थे। हायरे आलिम वीर औरङ्गजेब!

को हिन्दुन के खोजि खोजि कै मन्दिर फोरै।
को पुनि तिन की ठौर ठौर मैं मसजिद जोरै॥
फारि फारि कै वेद कौन मग मै बिखरावै।
हिन्दू कुल कुलतियनकों को पुनि कौन भगावै॥
कौन बाल को बाल प्रजा को कतल करावै।
लूट पाट की धूम धाम अब कौन मचावै॥
को हिन्दुन के धर्म कर्म को मूल बिगारै।
को पुनि बिनु अपराध कैम गनि परजा मारै॥
कहां अलाउद्दीन आजु चित्तौर संघारक।
फर्रुखसियर हु कहां राक्षसी मूरति धारक॥
कहं खिलजी को वंश कहां तैमूर सुहावन।
आलिम औरङ्गजेब कहां भारत भिनभावन॥

(आंसू पोंछता हुआ गद्गद) हा आज अंगरेजी राज्य क्या हुआ जवाल हुआ। मैंने दैव संयोग किसी

किसी उद्योग से एक बेर गदर करवा दी पर हा
अब तीस तीस बरस बीते औ कहीं तलवार नहीं ?
ओः मैं कब इस राज्य की बला से छूटूंगा ।

नेपथ्यमें—भारतेश्वरी महारानी की जय ।

दौ०—(चमक कर) ओः यह कौन दुष्ट रानी की जय धधकार रहा है ? (देख कर चिहुंककर) अरे भारत सौभाग्य !

सौ०—भोकसे नहीं तलवार लिये आकर क्यों रे अभी तैं भारत ही वध में है ।

मूर्ख देखता नहीं है न्याय तत्पर श्री महारानी विक्टोरिया की धजा फहरा रही है । देख—

चली रेल हू ठेल के ठानि आंधी ।
सबै ठौर में तारनैं तार बांधी ॥
कहौ ये कितो सोहती पाठमाला ।
कहूं बाल औ सीखतो केती बाला ॥
नदी पै किती सेतु सीधी बनी है ।
किते काननैं काटि बीथी ठनी है ॥
नहीं मार औ काट की धूम कोऊ ।
सबै न्याय माने प्रजाराज दोऊ ॥
कहां आजु दौर्भाग्य को कोक बाला ।
प्रजा रङ्ग सानी भई प्रेम माता ॥

(खङ्ग उठा कर) चल दुष्ट दूर हो नहीं अभी तेरा सिर काटता हूं।

दी०—अरे मूर्खता मूर्खता फूट फूट बचाओ बचाओ (निकल जाता है)

सौ०—अभी तक इस दुष्टने पूरा पूरा भारतवर्ष न छोड़ा। नहीं समझ पड़ता कि किस कोने में डेरा जमाये है। इसी मूर्खता की बड़ी सहायता रहती है। भला शिक्षा से तो पूछूं कि मूर्खता को कितना हटाया! (नेपथ्य की ओर देख कर शिक्षा शिक्षा इधर तो आना।)

शि०—(आकर) कहिये मैं तो आपही आती थी।

सौ०—कहो शिक्षा तुमारी कहां तक उन्नति है।

शि०—दिन दिन बढ़ती ही जाती है देखिये।

गली गली संवादपत्र की केती धूम मचाई।
गुजराती बंगाली आदिक भाषा हू लहराई॥
टूटी बूड़ी हिन्दी हू मैं किते ग्रन्थ बनवाये।
नगर नगर में ठानि वक्तृता मूढ किते समुझाये॥
ज्ञानदृष्टिसबकीअब बाढ़ीसब सुभ रीतिन ठानत।
हाल अमरिका इंगलैण्ड के घर बैठे सब जानत॥
संस्कृत हू की चरचा सों अब खुलन लगे है लोचन।
योगसाङ्ख्य हू की भई उन्नति कारनसबैदुखमोचन॥
करनलगी नाटककी लीला पुनि अब भारतवासी।

अबलाहू कछुसीखनलागी तजिजड़ताकी फांसी ॥
अंगरेजी घर घर में पैठी सबकों सबै सुभायो ।
कविताने अब ठौरें ठौर में अपनो रङ्ग जमायो ॥

सौ०—हां ? आहा हा हा बहुत अच्छा हुआ ईश्वर करै तुम्हारी दिन दिन उन्नति हो (ठहर के) अच्छा कहो एकता का क्या चरित है ।

शि०—(नेपथ्य की ओर देख कर) वह देखिये एकता भी इधरही आ रही है । सखी एकता एकता इधर इधर !

एकता—(आकर) आहा आप दोनों को प्रणाम ।

सौ०—कहो एकता तुम्हारी कैसी उन्नति है ?

ए०—जैसी यवनों के आक्रमण के पूर्व थी वैसी तो नहीं ।

शिक्षा सौभाग्य दोनों—तुम से सतजुग की बात नहीं पूछते हैं ।

ए०—पर बीच कीअपेक्षा बहुत ही अधिक है । कारण यह कि फूट रहने से मेरी कला नहीं चलती थी जहां उसने पांव हटाये कि फिर मैं ही मैं ।

सौ०—आज कल फूट कहां है !

ए०—कुछ कुछ मत वालों में है ।

शि०—मत वालों में तो नहीं मतवालों में होगी ।

सौ०—अच्छा चलो हम लोग बातें भी करते जांय औ तनिक भारतको देखेंवह अपने दुखभूला कि नहीं ।

(तीनों जाते हैं जवनिका गिरती है ।)

दूसरा दृश्य ।

(जवनिका का उठती है स्थान वन—
दौर्भाग्य मूर्खता औ फूट)

फू०—(क्रोध से मूर्खता की ओर) तैं सचमुच महा-मूर्ख है इधर उधर भागती क्यों नहीं ?

दौ०—चल बकवादिन ! उसी को गाली देती है वह जान बूझ के हटती है !

फू०—अरे तुम तुमतुम ! तुम कौन से भले आदमी हो, ये सब कुरम तो तुमारे ही किये हैं छि: मोछ पर हाथ धरते लाज नहीं आती ! मरद हो के मुंह छिपाये फिरते हो । डूब मरो चिरुवा भर पानी में ।

मू०—फूट फूट फूट—मैं तुझे इतनी चाहती हूं औ तैं मुझी को कहती है मैं अभी कूंवे में गिर के मर जाऊंगी अब भी मुंह सम्हाल ।

फू०—चल मटनो ! कूंवे में कूदने आई है इसी लिये मैं तुझे महामूर्ख कहती हूं ।

दौ०—(क्रोध से) औ मुझे क्या नामर्द कहती है ? मारूं दोहत्थड़ कि तेरी अकल ठिकाने हो ।

फू०—(हड़ हड़ा के हंस कर) यह कैसी मिरचा लागी है । अरे मूर्खता कूवे में गिरैगी औ फूट डंडे खायगी तो दौर्भाग्य कहां जायगा ? चूल्हे में !

(सब चुप)

नृपश्च में -God : -

I

GOD save our EMPRESS Queen ;
Long live our GRACIOUS-QUEEN ;
GOD SAVE THE QUEEN.
Send HER victorious,
Happy and glorious,
Long to reign over us ;
GOD SAVE THE QUEEN.

II

O LORD, Our GOD ! arise !
Scatter HER enemies,
And make them fall.
Bid strife and discord cease.--
Wisdom and arts increase.--
Filling out homes with Peace,
Blessing all

III

THY choicest Gifts in store
Still on VICTORIA pour.—
Health. Might and Fame,
While peasant, Prince and peer.

Proudly HER sway revere,—
Nations, afar and near,
Honour HER Name.

IV.

Guard HER beneath THY Wings,
Almighty KING of KINGS
SOV'REIGN unseen !
Long may our prayer be blest,
Rising from East and West
As from one loyal breast ;—
"GOD SAVE THE QUEEN."

(सब चकपका के चुप रहने का परस्पर संकेत करते हुए गाना सुनते हैं)

दौ०—(धीरे से दोनों का हाथ धर के) अरे भागो भागो देखो अंगरेजी पताका आती है।

फू०—अच्छा मैं जाती हूं भारत पताका को भेजती हूं और अब इन दोनों को आपस में लड़ाने का उद्योग करती हूं।

(सब जाते हैं)

(एक हाथ में चार कोने की पताका लिये कुछ वीरता भरा स्त्री वेष किये अंगरेजी पताका आती है)

IMPERIAL LIBRARY

अं० प०—(हिन्दी में) आज मेरी सी किसकी छटा है ? मैं हिन्दुस्थान में, मैं बर्मा में, मैं हांगकांग में, मैं आसट्रेलिया में, मैं जिब्राल्टर में, मैं न्यू ज़ीलैण्ड में, मैं केप्‌कलनी में औ मैं सेण्ट, हेलेना में और छोटे छोटे टापुओं का हाल कहां तक कहूं सूरज भी रात दिन भागे भागे फिरते हैं पर मेरा सामना छोड़ भाड़ में नहीं जासके। आज सब स्थानों में मेरा जय है।

नेपथ्य में—(गर्जन के साथ) ओः ! कौन पताका मेरे सामने अपनी माहात्म्य का वर्णन कर रही है ? ठहर मैं अभी आई।

अं० प०—[देख कर] इस भारत पताका को क्या हुआ है, अरे मेरे सामने भी ललकार ! ! धिक्—

बड़े बड़े गिरि राज शृङ्ग पै मैं फहराई ।
उदधिहु की लहलही तरङ्गन पै लहराई ॥
मेरो ही छाया मैं मिसरी प्रान बचायो ।
मराठों को छन मांहिं लखो मैं फूंकि उड़ायो ॥
जिब्राल्टर को किला एक मोती सो सोहत ।
रावन के लङ्का गढ़ पै अब मैं अवरोहत ॥
मैं फहराई रहत, किते साहन की छाती ।
भारत हू पै आज रहत मैं ही मदमाती ॥
मोसों भाषत झुरकि कौन ऐसी इतराई ।

भूमि छन जो है तासु नाम इङ्गलैण्ड उड़ाई ॥

(भारत पताका भारतीय वीर स्त्री वेष से दहने हाथ में पचरङ्गी तिनकोनी पताका लिये क्रोध में भरी आती है।)

भा० प०– कौन है ? इङ्गलिश पताका ! तुझे क्या हुआ है ? क्या भूमि भी हर ली जो ऐसा सामना को विजय भर की पताका ऐसी छोटी पताका भपका बढ़ावा है ? चेत ले ! मैं यश हूं जो इस समय भर संसार में फैल रही हूं।

मैं भारत की अहूं पताका सुनियो वीर पताका ।
द्वीप द्वीप में फैल रही है मेरो ही फल पाका ॥
अभी मैंने निजकर लीनो मिसरहिं तेज दिखायो ।
मैंने हेलना, कन्नो, आदि कठोरन राजजमायो ॥
मैं स्काटलैण्ड और इङ्गलैण्ड आयर्लैण्ड सम को ।
मेरो ही दिसि दिसि धोमा संग जय जय को धुनि धमको ॥

अं० प०—अब मुंह सम्हाल ।

भा० प०—चुप रह तू मुंह सम्हाल महारानी विक्टोरिया के प्रताप से नहीं डरती बक बक कर रही है !

नेपथ्य में—खबरदार खबरदार (दोनों नेपथ्य की ओर देखती हैं इतने में लाल कुड़ती पहने, जवाहिरों में लकझक, कसी बांधे वीर वेष से, अरुण

वर्ग, प्रताप आता है।)

प्रताप—(दोनों को ओर देखकर दोनों को अलगर हटा कर) क्यों ? महारानी के राज्य में झगड़ा ?

अं० प०—देखिये यह भारत पताका कहती है कि जहां जहां अंगरेजी राज्य है वहां मैं ही फहरा रही हूं।

प्रताप – भा० प० की ओर देखता है।

भा० प०—जी हां ठीक है जब कि महारानी Empress of India अर्थात् भारतेश्वरी हैं तो भारतेश्वरी की ध्वजा सब स्थानों में हुई। बस वही मैं हूं। जब किसी राज्य का विजय हुआ तो यही कहलाया कि भारतेश्वरी ने अमुक स्थान को जीता बस तब यह क्या कि जीते भारतेश्वरी औ पताका उड़े इङ्गलैण्डेश्वरी की। नहीं यह अंगरेजी पताका नहीं है वह भारत पताका है। हमारी महारानी भारतेश्वरी कहलाती है न वह, किलिगोलैंडेश्वरी के पद से प्रसन्न है औ न वह इङ्गलैंडेश्वरी के पद से प्रसन्न है। बस हुआ भारतेश्वरी की पताका सर्वत्र उड़ती है औ वह पताका मैं हूं।

अं० प०—देखिये किस पेच पाच से बोलती है।

प्र०—बस झूठा झगड़ा न करो तुम दोनों अपनी ओर देखो तुम दोनों एक हो—जब तुम दोनों ही को

श्री महारानी विक्टोरिया ही की जय मनाती है औ दोनों को उसी का बल है तब आपस में झगड़ा न करो इङ्गलिश पताका तू ठीक कहती है तू सभी स्थान में है औ भारत पताका तू भी बहुत ठीक कह रही है अब द्वीपों में भारतेश्वरी की जय है औ तू उसी की पताका है। समझता हूं कि तुम्हे फूट ने बहकाया है पर तुम न बहको दोनों गले लगो।

(दोनों "महारानीकी जै" कहकर गले लगती हैं।)

(नेपथ्य में संगीत होता है ये सब सुनती हैं)

(ठुमरी मशीद खानी कान्हरा)

जय भारत महारानी जय जय जय भारत महारानी हो ॥ जय० ॥ तुव जस चन्द चांदनी देखत चन्दहु मति बौरानी हो ॥ जय० ॥ अधिक सोच सों धावत दिसि दिसि हिय में हानि गलानी हो। सोई मलिनता ताके हिय की ह्वै कलङ्क प्रगटानी हो ॥ जय० ॥ अति दुख सों पुनि छई रोग भयो देह कान्ति बिनसानी हो। रोग हरन रवि निकट गयो तिन-धिंहु विधि कान्ति पुरानी हो ॥ जय०॥ बार बार योंही दुख पावत औरहु मति अकुलानी हो। चढ़ि चढ़ि गगन गिरत जल निधि में मति तबहू न थिरानी हो॥ जय० ॥ कबहुंक छिपत

जाइ भुकाया अधिक लाज प्रिय मानी हो। चन्द्रहिं सुकवि सम्बोधि सकल महिं दोऊ डीठि ठठकानी हो ॥ जय० ॥

(दोनों पताका। आहा यह गीत कौन गाता है ?

प्र०—यह राजभक्ति उमंग रही है, चलो हम लोग भी वहां चलें। (सब जाते हैं)

पटाक्षेप।

स्थान उद्यान में बंगले का बरामदा परम सुन्दरी भूषण भूषित, हाथ में तानपूरा लिये गाती हुई राजभक्ति बैठी है।

(वे तीनों चुप चाप आकर खड़े हो जाते हैं औ आंखें राजभक्ति मीच संस्कृत में श्लोक गाती है)

(धुन खाम्हरा)

पद्मासनं नृपतयः शिरसा वहन्ति, नास्तं प्रयाति मिहिरोपि यदिय राज्ये ॥ दुष्टेषु निष्कृप कृपाण करा सदा सा बिक्टोरिया विजयिनी विजयं बिभर्तु ॥

राजभक्ति—(आंख खोल कै दोनों पताका और प्रताप को देख कर उठ कर आहा आइये२ अहो भाग्य (तीनों को अलग २ कुरसियों पर बैठाती है)

प्र०—कहो राजभक्ति, इस समय क्या उमंगरही थी ?

रा०—(स्मित पूर्वक) क्या कहूं मेरा रात दिन यही जी करता है कि मै भारत शासक की जयध्वनि किया करूं। देखो।

भारत जब जुवराज पधारे ।
तब मैं केते सुमन उछारे ॥
नगर नगर मैं भंजा उड़ाई ।
सरसाई शाजी सजवाई ॥
दीपक माल दिवारी कीनी ।
नई नगर शोभा रचि दीनी ॥
किला आदिहू सब विधि साजे ।
बहु विधि विजय बाजने बाजे ॥
जब रानी भारत महरानी ।
पद धरि अतिही हिय हुलसानी ॥
तबहू मैं बहु उत्सव कीने ।
सब मन दान गरीबन दीने ॥
रानी पै कोउ गोली मारी ।
पै तिहि तेज दूर तिहिं डारी ॥
तबहूं मैं बहु खुसी मनाई ।
आनन्द सो नाचो अरु गाई ॥
नये लाट जब जो ह्यां आवहिं ।
तब सब हम बहु [illegible] लगावहिं ॥
भारत तजि जब निज पधारे ।

तब हम कोते आंसू ढारे ॥
रानी की जब सुनहिं बड़ाई ।
सुखी होहिं जनु नौ निधि पाई ॥
सबमिलि टिक्कस भलेहिं लगावहु ।
काछु मति हिय मांहि लजावहु ॥
हम तो रानी की जय कहिहै ।
और कछू नहिं हिय में गहिहै ॥
पाथर मारि चमकि बहु गरजै ।
पै चातक घनहि लगि लरजै ॥
राज भजन हमरी इक आसा ।
और न नीको लगै तमासा ॥
मेरे ही बस भारत वासी ।
रोवन तजि सुख राचत हांसी ॥
राजा की जय गहकि मनावत ।
और कलेश न जिय में लावत ॥
बहु दिन बीते नाचे गाये ।
रहो कछू सोई जिय अटकाये ॥
कब कोउ राज महोत्सव ऐहै ।
हमरो जिय अति ही उमगैहै ॥

प्र०—तो चिन्ता क्यों करती हो देखो न जुबिली महोत्सव उपस्थित है।

रा०—जुबिली क्या ?

प्र०—यह एक हिब्रू भाषा का शब्द है पर जब किसी महाराज को राज करते२ पचास वर्ष बीत जाते हैं

तब एक उत्सव होता है उसी का नाम जुबिली है।

रा०—तो क्या हमारी महारानीको पचास बरस बीत गये ?

प्र०—बीत नहीं गये; बस यही पचासवां बरस है।

रा०—(अपनी हार तोड़ के मोती उछाल के) अच्छा

हा ! अब मेरे नाचने कूदने का दिन आया।

(एक ओर एक थैली में रुपये झनझनाती

उदारता आती है)

उ०—लीजिये, मैं उदारता हूं, आपहुंची, कहिये नगर

रचना के लिये कितने रुपये इकट्ठे कर दूं।

(दूसरी ओर से दया आती है)

द०—अच्छा मैं दया भी आ पहुंची, अब लूलो लंगड़ों

को अन्नवस्त्र देना चाहिये कैदियों को छोड़ना

चाहिये औ पदार्थियों, पदोपहार देना चाहिये।

अं० प० (उठकर) Rule Britaniman Rule over seen.

भा० प०—(उठ कर) श्री राज राजेश्वरी की जय

(प्रताप उठता है उस के साथही सब उठते हैं।)

प्र०—अच्छा चलो हम लोग सब मिलके इस उत्सव

का प्रबन्ध करें।

रा०—हां हां चलिये।

(आगे आगे हाथ पकड़े दोनों पताका फिर प्रता-

प औ उसी के वामाङ्ग में नम्रता भरी राजभक्ति

उसके पीछे और सब जाते हैं।

(जवनिका पतन)

तीसरा दृश्य ।

(यवनिका उठती है—श्याम उद्यान समय रात्रि ४ बजे लालटेन लम्प आदि जल रहे हैं। एक ओर घड़ी भी लग रही है। और बड़े बड़े घुंघराले बाल छटकारे पान चाबे सुन्दर वस्त्र औ भूषण से भूषित विषय भोग बैठा है। इस के पास सितार, ढोलक, चिड़ियों के पिंजरे, चौपड़ पासे, अतरदान, फूलदान आदि अनेक भोग पदार्थ धरे हैं।)

वि० भो०—(टोपी अलग रख कर अतरदान से थोड़ा अतर बालों में लगाकर कंघी फेरता हुआ) यों :—
"अपने भी बहार के दिन अब हवा हुए" इस में कोई शक नहीं कि सब दिन एक सा नहीं गुज़रते। किसी दिन मेरी भी क्या तूती बोलती थी पादशाह से लेकर एक छोटे सिपाही तक में फैल रहा था। मेरे ही लिये पादशाह लोग गांव के गांव जला डालते लोगों के घर से औरतें तक छीन मंगाते थे औ शहर के शहर लूटपाट कर नेस्तनाबूद करते थे पर अब क्या कहूं—"इस क़दर सदमें सहे हमने बुतों के इश्क़ में। दिल ज़गारी का किसी से हौसला जाता रहा" "थी वह सारी वहशतें कोपी जुनूं तक अब कहां। सर से वह

सौदा औ दिल से बलबला जाता रहा ॥" (हुग्गी लेके गाता है । कलंगरा, ठेका होरी व्यजाति)

कोऊ दिन हमहूं राजकियो । कोऊ० । जवन राज के सीस चढ़े हम बरबस हियो लियो । कोऊ० । दोऊ रजोगुन और तमोगुन हमरी बांह गही । लम्पटता धूर्त्तता आदिहु और हाथ रही । कोऊ० । मिली दुष्टता और मत्तता संग प्रमादहु आयो । घर घर छाइ फिरि सब को हिय धरमहिं धूरि मिलायो । कोऊ० । किती कुलबधू बल करि करि कै जवनन हाथ छिनाई । लुटवाये पुनि नगर किते-कहु घेरि आग लगवाई । कोऊ० । रजिया बेगम सी रानिहु को सब विधि ईजति लीनी । राज-कुड़ाइ पठाइ गहन बन सोवत ही हति दीनी । कोऊ । हमरी सखी क्रूरता कोउ दिन निज छट-काई छटा । हिन्दुन के रुधिरन की विन्दुन बरसाई जनु घटा । कोऊ० । मन्दिर तोरि मसजिद बहु कोनी हमरे साथी लोग । हाय गंवाई सुकवि नवाबी परि अंगरेजी रोग । कोऊ० ।

(ठहर कर) मेरी नवाबी उठ जाने का खास सबब यह है कि गवर्नमेण्ट में मूर्खता नहीं है; यहां शिक्षा चंवर डुराती है । (फिर गाता है)

(परज—कौआली ठेका)

मूर्खता अब तू पुनि कब ऐहै। मू०। दर्स देइ दौ-भाग्य हमारे नैननि कबै जुड़ैहै। मू०। कबधौं फूट पैठि घरघर में अपने मन की कैहै। कहहु सुकवि अब विषय भोग कब अपनो राज जमैहै। मू०।

(मूर्खता औ दौर्भाग्य दोनों आते हैं—दोनों एक एक हाथ आपस में पकड़े हैं। दौर्भाग्य के एक हाथ में मद्य का बोतल है औ मूर्खता के हाथ में कांच का प्याला है)

दौ०—यह देखो इधर विषय भोग भी उदास से बैठे हैं। (विषय भी उठ खड़ा होता है तब अभिमुख हो कर) क्या जी तुम क्या उदास से बैठे हो! हम लोगों को देख के तुम भी रोने लगे क्या? ऐं! अरे ऐसा कौन है जो तुम्हें न मानैगा। तुम्हारे दोनों हाथ लड्डू हैं बादशाही नवाबी गई तो क्या अंगरेज़ी में लोग फकीर हो गये हैं। देखो अब भी तुम्हारा कितना सम्मान है।

[कलंगरा—ठेका कौवाली]

भारत विषय भोग को प्यारो। पाइ संग अंगरेजी को अब ह्वै गयो अधिक दुलारो। भारत०। अतर सेवती अरु गुलाब के अब नहीं याको भावत। भांति भांति लावेण्डर सीसी लादि जहाज मंगा-

यत ॥ भारत० ॥ बीना छाड़ि बजाइ पयानो
उपंगत ताहि मांही। दूध मलाई तजि चखि
बिसकुट गहत तिया को बांही ॥ भारत० ॥
लाखन खेल तमाशा यानें इङ्गलैंड तें मंगाये।
सुकवि बैठि अब सोच करत तुम लगत हमें
बौराये ॥ भारत० ॥

वि०-हां ठीक है पर मेरा तुम लोगों से साथ छूट गया आ अब मुझे मेरी प्यारी क्रूरता दुष्टता मतला आदि का विरह दुःख सहना पड़ता है इसका दुःख है ।

मू०—(नखरे से) ए: यह आप बातें बनाते हैं।

वि०—क्या मैं झूठ कहता हूं ! आपने सुना होगा कि फर्रुखसियर के दर्बार में किसी नें कहा कि 'जहां पनाह कोयल से बढ़कर शीरीं ज़बां चिड़ियां में तो कोई नहीं होता' तब उसी वक्त हुक्म हो गया कि कोयलों की जीभ काट काट कर उसकी मिठाई बनाई जाय देखें कैसी होती है। योंही किसी नें ज़िक्र की थी कि आंख से बढ़कर नर्म कोई चीज़ नहीं होती तब साथ ही शाही हुक्म हुआ कि कल सड़क पर आंखें बिछाई जांय उसी पर पैर धर के सवारी गुज़रैगी। कहो ये राज़ आज कल कहां ! औ इसका खास सबब यह है

कि उन दिनों दर्बारि शाह में आप ही तशरीफ़ रखती थीं औ आप ही के साथ साथ ख़ुरना वग़ैरह भी क़ुरशी पाती थीं औ आज काल के अंगरेजी दर्बार में हुज़ूर के सब्ज़ क़दमों को गुज़र नहीं ।

दौ०—अच्छा साहब यह रांड़ रोना तो लगा ही रहैगा । अब ज़रा अख़बार तो पढ़िये। देखिये क्या ताज़ी वलायत से आ रही है ।

नेपथ्य में—(तानपूरे के सुर के साथ)—

बीते बरस पचास, जेहिं अखण्ड सासन करत ।
सो हिय भरी हुलास, चिरंजीवो विक्टोरिया ॥

बहुत स्वर से—

बोलो राजराजेश्वरी की जय ।

(सब चिहुंक उठती हैं)

विष०—यह कैसी धूम है !

दौ०—आप नहीं जानती !

वि०—नहीं ।

दौ०—आजु महारानी को राज करते पचास वर्ष हुए उसी का उत्सव है । कहिये आप भी कुछ खुशी मनाइयेगा !

वि०—खुशी वो मनावै जिसे खुशी हो हमारे तो दोस्तों तक को रानी ने न छोड़ा । हम तो काला

फीता (अधबीच ही में)

नेप०—(प्रताप के स्वर से) खबरदार २ सम्हाल के बोल अभी जीभ काट डालूंगा।

सब०—(डर के) हां हां हम खुशी मनावेंगे।

(सब थोड़ी देर चुप)

दी०—(धीरे से) अच्छा बाबा चलो हमलोग भी भीतर रोते जांय बाहर हंसते आंय। नहीं तो प्रताप बाबू कटार लिये खड़े हैं। अच्छा बाबी विषय भोग तुम क्या करोगे ?

वि०—हमतो जगह जगह तवायफों का नाच करावेंगे औ बोतल ढालेंगे

दी०—अच्छा मूर्खता तुम क्या करोगी।

मू०—मैं बहुत काम करूंगी।

दोनों—क्या क्या !

मू०—मैं जो गधे दौड़ावेंगे उन्हें इनाम दूंगी जो आंख बांध सिर पर घड़ा ले दौड़ेंगे उन्हें इनाम दूंगी औ जो बोरे में बैठ उछलेंगे उन्हें इनाम दूंगी। मैं रोशनी के लिये बलायत से तेल मगाऊंगी जिस्में इसका भी पैसा यहां न रहै। ज़ादः क्या कहूं कोई माई का लाल मेरे हाथ फस जायगा तो उससे ऐसी आतश बाज़ी बनवाऊंगी कि उसमें जितना कागद का काम हो नोट से लिया जाय।

नेप० में—(तोप दगने की ध्वनि होती है।)

सब०—चलो चलो देखो तोपें धमकने लगीं। हम धूम
ने भारतवर्ष को जगा दिया अब हम लोग यहां
नहीं ठहर सकते।

(सब जाते हैं)

(पटाक्षेप—स्थान हिमालय की उपत्यका—एक चटान
पर भारतवर्ष सो रहा है। चारों ओर घास बन-
स्पति पशु आदि हैं प्रायः प्रातःकाल है।)

नेप० में—(बाजे और घनघोर कोलाहल के साथ जय
ध्वनि होती है, भारत की धीरे धीरे निद्रा खुलती
है, फिर बाजे के साथ बड़ी धूम से 'महारानी की
जय' की ध्वनि होती है तब चकित होके इधर
उधर देख कर)

भारत०—अरे यह क्या धूम है ये क्या कर रहे
हैं ? मैं दिनों तक तो यवनों की मार से मूर्छित
पड़ा था। फिर अब उन्हीं उपद्रवों के कम होने
पर मुझे कुछ नींद सी आ रही थी अब किस दुष्ट
ने बाजे बजा कोलाहल कर मुझे जगा दिया ?

ने० में—(फिर अंगरेजी बाजे बजते हैं।)

भा०—हां। क्या फिर कोई अजनबी पहुंचा ? अरे
दौड़ो दौड़ो क्षत्रियकुल इन दुष्टों का सामना
करना ! आ यदि तुम्हारे देखते देखते इन दुष्टों को

नगारों की गड़गड़ाहट औ झंडों की फरफराहट मेरे ऊपर होती रहैगी तो धिक्कार है तुम्हारे जीने में।

नेप० में—(कोलाहल के साथ घोड़े बग्घियों की खड़खड़ाहट।)

भा०—(आटखाने से तलवार निकाल कर खड़ा हो कर) क्या हुए सब क्षत्रिय क्या वे भी मेरी ही भांति सो गये हैं? आज तक मेरी जो दुर्दशा हुई है सो उन्हीं की शिथिलता से। अब ये भलेहीं कहैं कि "हमने तुम्हारे लिये सिर तक कटवा दिये अब तुम्हारा दौर्भाग्य कि तुम्हारी यह दशा है हम क्या करैं" पर मैं मानूं कब? जो ये अपनी धर्मपत्नी एकता को छोड़ व्यभिचारिणी फूट से न फंसते तो क्या किसी दैत्य दानव का भी सामर्थ्य था कि मेरा बाल बांका करे?

अब भी—

उठहु २ सब बीर किते तुम सेज संवारी।
खोलहु नयन उघारहु बीर आंखें झपकारी॥
निज अंगन पै साज देहु कटि कसहु पटुका।
एक बार पुनि गरजि अबहु रिपु हिय धुका धुका॥
रघुबंसी सजि साज बाजि की घटा संवारहु।
पुनि बघेल चन्देल दुरद की घटा संवारहु॥

क्यों हैहय नहिं गहत आजु कर गहकि कृपाना ।
नहिं विसेन बंदूक लेइ साधत सन्धाना ॥
कहँ सुबंस कलहंस हंस उड़ि गयउ पराये ।
बैरि नगारे सुनत क्यों न बरछी लै धाये ॥
भोजपुरी छत्री सब मिलिकै क्यों नहिं गरजत ।
बान वृष्टि की बरसि क्यों न तीखे ह्वै तरजत ॥
अवध बीर क्यों नांहि पटा की छटा दिखावत ।
क्यों कनौज के बीर नांहि भाला झलकावत ॥
चपल तुरङ्ग नचाय बांधि पचरङ्गी चीरा ।
राजपुतानो क्यों न जमत रन धीरा बीरा ॥
क्यों पंजाबी बीर सिंह हू सों नहिं बांके ।
निज धौंसा धमकार चलत नहिं निडर निसांके ॥
ठौर २ में तुमरे बांधे किला सुहाये ।
धौंसा तुमरे बजत और झण्डा फहराये ॥
अजहूं जो तुम हाय बीर छत्री गन जागहु ।
अपने अपने राज धर्म में सब मिलि लागहु ॥
तौ पुनि भारत किहुं विधि लैहै सुख के सांसा ।
फेर मचैहै राग रङ्ग औ खेल तमासा ॥

नेप० में — (सितार ढोल के साथ ।)

(भैरवी)

जागहु जागहु भारत प्यारे । जवन राज की रैनि
गई अब भरि विविध अंधियारे ॥ जा० ॥

भा० —हां यह यवन सेना का उपद्रव नहीं है ? तो क्या धूम है ?

नेप० में—(यही गीत ।)

अब रानी विक्टोरिया जी की धमकै बजत नगारे।
तासु प्रताप दिवाकर जाग्यो शीतल किरन पसारे॥
जा०॥ विलस आनन्द के अंग प्रजा के गीत शोर झनकारे। लखहु सुकवि युक्त पिक शारदहु सब चहुं ओर चहकारे॥ जा०॥

भा० —(नेपथ्य की ओर देख कर ।)

अः हां ! मैं तो समझता था कि अब दौर्भाग्य का समय है पर यह तो फूलों की माला पहिरे आनन्द में मगन सौभाग्य चला आ रहा है ! आइये आइये आइये।

(यथोक्त सौभाग्य आता है औ दोनों आलिङ्गन करते हैं ।

सौ० —भारत अब क्यों उदास हो रहे हो देखो यह तुमारी उन्नति का समय है। तुम अपनी ओर तो देखो तुमारा आकारही और का और हो गया है। आज काल स्थान स्थान में लोग यही कहते हैं कि—
लोह की वीथी बनी चहुं ओरहिं रेलन की घघकार छयो है। तारन की पुनि तारलगी छन मात में आनुत हाल नयो है॥ सेतु बंधी अति तीखी

नदीन हूं धार धुआंकस धूम ठयो है। है अंगरेजी
गलीन गली अब भारत और की और भयो है॥

इन दिनों थोड़े दिनों से भारत में यन्त्रविद्या ने भी यश फैलाया है स्थान स्थान में धुंवां धधकाती हैं और रुड़की में तो इस के भारी व्यापार फैल रहे हैं। देखो शिल्प भी बहुत दिनों के अनन्तर अब फिर खेल कूद करने लगा अब कलकत्ते औ बम्बई के छोटे २ लड़के भी ऐसे चित्र लिख डालते हैं कि देख कर आंखें ठठका जाती हैं।

भा०—क्यों यन्त्रविद्या और शिल्प फिर चमकैं ?

आज्ञा—

कोउ दिन बड़े बिमान उड़त हैं भारत ऊपर।
जिन पै चढ़ि सांधत है जन सह्वजहिं जिम भूधर॥
पांस दुर्गहू अनत हुते भारत में कोऊ दिन।
आवतही जिहिं निकटबंधतही सेना तिहि छिन॥
जलहू पै रथ लेइ जात हैं केते राजा।
अच्छय पुनि तूनीर रचत हे कनकन साजा॥
कहूं किती बहु भांति यन्त्र की महिमा पूरी।
भारत ही सों सीखि बिदेसिन लई अधूरी॥
थल कों जल को स्वच्छ करन हे कोऊ सुजाना।
कोऊ जलहू पै थल से साजे सबै निसाना॥
देस देस के चित्र छनहिं लिख डारैं केते।

मानहु निज मीतम चित्र उतारि लेते ॥
चन्द्रकान्त मनि ढूंढि तासु पुनि घटा बनाई ।
इन्दु किरन जिहि पाइ नीर बिन्दुन झरलाई ॥
शिल्प एक भारत को भूषन सब कोउ जानत ।
ताही सों सब निज देसन की उन्नति ठानत ॥

अच्छा चलिये उन से सुझे मिलाइये ।

सौ०—मैं अभी आने के समय उन दोनों को आप के पास बुला चुका हूं । वे आते ही होंगे ।

भा०—हां, क्यों नहीं, सौभाग्य भी यन्त्रविद्या औ शिल्प को न बुलावेगा तो कौन बुलावेगा ?

सौ०—(आकाश की ओर देख कर अंगुली से बताकर) वह देखो दोनों जनें एक गुब्बारे पर बैठे उतरे आ रहे हैं ।)

भा०—हां आही तो पहुंचे आहा—

बादर बिदारत सो चल्यो है गगन ऊंचो मानो छन ही मैं सुधि लेइ है सितारे की । मानहुं खगेस पसराइ कै पताका पंख चल्यो है कारन सैर रवि उजियारे की ॥ मण्डप सो माया को त्यों बुलन बयार को सो रचना सुहात जामें झमाझमकारे को ॥ देव के बिमान हू को राखत न मान यह देत है महान मोद उड़न गुबारे को ॥

सौ०—हां यह ज्यों ज्यों उतरता आता है त्यों त्यों इस

का आकार कैसा स्पष्ट देख पड़ता जाता है।

देखिये—

पहलैं दिखायो एक धूर के कनूंका भ्रम फेर धीरैं धीरैं धार्यो रूप याने तारा को। कैरव कुसुम सो कपास सो भयो है फेर भयो त्यौं कपोत पोत वायु के बहारा को॥ हंस सो त्यौं सारस सो सेत घन खण्ड हू सो फेर दिखरानों घेर विविध प्रकारा को। अब तो सबै ही सुभ सोभा भयो रङ्ग ढङ्ग अङ्ग औ उपङ्ग देखि परत गुबारा को॥

(क्षणमात्र दोनों चुप रहते हैं)

(आकाश से गुब्बारा उतरता है उस पर से यन्त्र-विद्या औ शिल्प शास्त्र दोनों उतरते हैं। भारत दोनों का हाथ धरता है "शिल्प औ यन्त्रविद्या मोजा जूता आदि विलायती पहरे हैं औ कपड़े विलायती हैं पर उनका ढंग हिन्दुस्तानी है" दोनों भारत पर विशेष प्रेम दिखलाते हैं।)

भा०—कहिये आप लोग प्रसन्न तो हैं।

दोनों—हां प्रसन्न हैं आप कहिये आप प्रसन्न हैं ?

भा०—(उष्ण निःश्वास लेकर) आप लोगों का दर्शन नहीं तो मैं प्रसन्न ? हा—(आंसू डबडबा कर) कहां एक दिन मेरे यहां ऐसे ऐसे यन्त्र बनते थे कि ज्योतिर्वेत्ता लोग केवल छाया औ वेध के बल से

खगोल को स्थिर करते थे। भीम के यहां और और गढ़ों के साथ एक अस्त्र दुर्ग भी था कि शत्रु की सेना वहां आवै तो आप ही तलवार और बरछी चलने लगैं कि सब कट मरैं। पुष्पक विमान प्रसिद्ध है कि जितने पुरुष उस में बैठना चाहैं उतनों ही अवकाश उस में मिलै। चित्र लेखा आदि का वृत्तान्त किसी से छिपा नहीं है। पर हां आज मुझे तुम ऐसा छोड़ गये हो कि कोरा चिमटा कड़ाही बनाना ही यन्त्र विद्या का काम रह गया है औ पुरवा कसोरा बनाना और भंडेहर बनाना ही शिल्प रह गया है। (आंसू पोंछता है सौभाग्य भी शोक मुद्रा से अलग खड़ा है) हा! जिन नगरों में केले के पत्ते ऐसे भांति भांति के कपड़े बनने की धूम थी आज उन्हीं व्यापारियों के आर्त कार की धूम हो रही है। औ चीन औ कांच के व्यापारों के कारण एक दिन वह भी भयङ्कर समय आवैगा कि जिस बनारस के ठठेरी बजार में अब भी धड़ाधड़ पीतल के बरतन बनने की धूम रहती है वहां भी लोग भूखों के मारे छाती पीट पीटकर रोवैंगे।

शिल्प—(अपने रूमाल से भारत का आंसू पोंछ कर) हैं हैं! धीरज न छोड़ो—देखो अब शिक्षा फैलगई है संवाद पत्र घर घर हैं औ नगर नगर में लोग वक्तृता

कर कर उन्नति कर रहे हैं अब लोग मुझ पर भी ध्यान देंगे।

यन्त्रविद्या—भारत धीरज धरो। कहो इस में हम लोगों का क्या दोष है ? तुम्हारे सन्तानों में पण्डित लोग कोरी दांत कटाकाट औ सुंघनी सुरती में डुबे, उर्दू फ़ारसी वालों को ग़ज़ल से छुटकारा नहीं अंगरेजीवालों को बिसकुट का नशा राजाओं को खिताब के प्रबन्ध में दिन बीतते हैं, महाजनों की सूद जोड़ते तोंद निकली आती है, अफ़सरों को हुकूमत का जोश, मातहतों को अफ़सर की तोष, बुद्धिमानों को मज़हबी झगड़ा, औ मूर्खों को तें में का रगड़ा। अब कहो हमें कोई पूछे ही नहीं तो हम क्या करें ? किसी किसी भांति अमेरिका में और इङ्गलैण्ड में दिन काटते हैं। अब भी अपने सन्तानों को जगाओ कि हमारी ओर देखें।

नेप० में—(दूर की स्वर से बाजे के साथ गीत होता है सब कोई एकाग्र सुनते हैं।)

(सिन्धु भैरवी तिताला).

राणी को जै बोलो म्हां का राज। राणी०॥ चारूं ओड़ वारी तोपां को घहराई गो गाज॥ राणी०॥ फहराया निसाण कै देखो भय्या पचरंग्या साज। सुकवि पढ़ै छै कविता ओंको फूल

उछालो थाल ॥ राणी० ॥

भा०—यह गीत कहां होता है ?

यज्ञ०—आज इस महोत्सव में कहां गीत नहीं होता । देखो यह राजपुताने में इस धूम से गीत हो रहे हैं कि हिमालय तक उस की राग छा गई है । अब सवेरा हुआ । आज नगर नगर में उमङ्गो गान औ जय ध्वनि होगी, तुमको आज आंसू न गिराने चाहिये चलो इसी उत्सव में लगो ।

सो०—हां हां चलो नाचैं गावै आनन्द करैं ।

(सब जाते हैं)

(जवनिकापात)

चौथा-दृश्य ।

(अवनिका उठती है—स्थान मैदान डेरों तम्बू एक ता हाथ में फूलों का गुच्छा लिये खड़ी है—नेपथ्य में अंगरेज़ी बाजे बज रहे हैं औ कुछ कुछ घोड़े की टाप की औ कवायद के बोल चाल की आहट सुन पड़ती है ।)

एकता—(उसी ओर देख कर) वाह ! वालंटियर लोगों ने भी बड़ा आनन्द मचा रक्खा है (अंगुली से बता कर) वाह क्या इनके घोड़े चक्कर खा रहे हैं ये इधर पचासों सिपाही पांव पांव किस झोंक से चल रहे हैं । इनके एक साथ पांव बढ़ाने से ऐसा जान पड़ता है कि यह इतना बड़ा एक जन्तु है । यह सबों ने कांधे पर से बन्दूक उतारी यह साधी बस अब छोड़ना चाहते हैं । नेपथ्य में बन्दूकों के छूटने की धड़धड़ाहट होती है) (एकता थोड़ी देर चुप चाप खड़ी देखती है) (नेपथ्य में दूसरी ओर तालियां बजती हैं—एकता उधर देखकर) आहा वह इधर स्कूल के लड़के लोग कसरत कर रहे हैं ! वाह इनका नटवर वेष औ चञ्चलता से भरा उछलना कैसा अच्छा लगता है । (नेपथ्य में बहुतों के स्वर से Bravo Bravo सुनकर) वाह

वाह ! क्या बात है ! यह लड़का इतने ऊंचे पर से क्या कलई खाता कूद पड़ा है ॥ (ठहर के) अच्छा चलूं उत्साह से तो मिलूं (देखकर) वाह यह उत्साहै तो मेरी ही ओर चला आता है । (सांवलासा उत्साह काछनी काछे कामदार टोपी पहरे भूषणों से भूषित ठमकता हुआ आता है ।)

एकता—आइये आइये कहिये आप कहां !

उत्साह—मैं आहां ! वाह

(गाता है)

'(आसावरी धीमा तिताला)

आज मैं घरही घर छायो । घरही घर छायो—आज मैं० ॥ नील गिरि सों हिमालय गिरि लों बहु विधि रङ्ग रमायो ॥ आज मैं० ॥ नगर नगर अरु गांव गांव में विविध निसान उड़ायो । आजु एकता अरु उछाह को विधिनैं जोग मिलायो ॥ आजु मैं० ॥ अति बालक अति वृद्धहुं सों हम रानी जय कहवायो । विविध कवित सङ्गीत रु नाटक सुकविन्ह सों बनवायो ॥ आजु मैं० ॥

ए०—ठीक है ठीक है आज मेरा हाल पूछो तो—

(झंझोटी-जलद तिताला)

मैं हूं बहुत दिनन मैं जागी । जागत ही पुनि भारतबासिन नस नस ही मैं पागी । मैं० । भयो न

कबहु होइहैं ऐसो सबै प्रजा अनुरागी। सुकवि भवे भारत भयो हरषित एक काम के लागी० ॥ मैं हूं० ॥

उ०—अच्छा दैव संयोग तुमारा हमारा साथ हुआ है यदि हम दोनों के साथ शिक्षा भी हो तो क्या जानें क्या कर डालें—चलो शिक्षा को बुलावें।

ए०—अच्छा मैं अभी बुलाती हूं (कोने की ओर झुक के) शिक्षा शिक्षा! इधर तो आना। (शिक्षा नेपथ्यही में से आई आई कहती आती है औ एकता से मिलकर उत्साह का एक हाथ पकड़ कर खड़ी हो जाती है)

उ०—आज दैव संयोग हम तीनों इकट्ठे हुए हैं। ईश्वर करे ऐसे ही हम तीनों बार बार मिलते रहैं। आओ अब चलो देखें नगर में क्या शोभा है? औ फूट मूर्खता आदि की क्या दशा है।

ए०—हां हां चलिये।

(बीच में उत्साह को कर एकता औ शिक्षा उसके एक एक हाथ पकड़े ठमकते हुए चले जाते हैं)

(पटी क्षेप स्थान जङ्गल का किनारा मूर्खता औ दौर्भाग्य-मुंह बिदारे खड़े हैं तब तक झोंका से फुनफुनाई फूट आती है)

फू०—यह दहीजरऊ के नाती यहां खड़े हैं। खूब

भरो पानी में ।

दी०—(मूर्खता की ओर आंख गुरेर के) मैं क्या करूं ! यह रांड़ तो इधर उधर भागी फिरती है । फिर इस के बिना मेरी कहां गुजर ।

मू०—(नखरे से) वाह रे "धोबी धोबिन से न जीते तो गदहे का कान उमेठे" (हाथ चमकाकर) वह तुमारी नानी फूट गरिया रही है तो उस से तो नहीं बोलती औ मुझे ही मूधी सी पा ली है ।

फू०—चल भटनी ! उन अपने बाप से तो नहीं बोलती औ मेरी ओर हाथ चमकाती है ।

दी०—फूट देख, तैं बहुत बढ़ बढ़ के बोल रही है ।

फू०—(बीचही में) तुम दोनों चूल्हे में जाओ मुझे कुछ काम है ।

मू०—अच्छा तै बड़ी सेखी झांकती है कह तो तैं आज क्या कर रही है ?

फू०—मैं ! मैंने पण्डितों को तो अलग बहका दिया है कि एक दूसरे के श्लोक में दोष निकालते हैं इधर स्कूल के लड़के और पुलिस के सिपाहियों को ऐसा बहकाया है कि लड़कों की धूम धाम में सिपाहियों ने हाथ डाला सो लड़के अलग ही धुरंफुर कर रहे हैं । हिन्दू औ मुसलमानों में ऐसा पेच डाला कि वे कहते हैं हम अधिक धूम करें ।

थी वे चाहते हैं कि हम अधिक धूम करें। बस मैं अब अपना वर्णन आपही कहां तक करूं।

मू०—अरे मस्तानी तो तैं इतना नहीं समझती कि उन राजों में कुछ २ मूर्खता न होती तो वे कैसे तेरे धोखे में पड़ते !

दौ०—औ मेरा तेज तुम लोग नहीं देखती कि और और तो जहां तहां तुम दोनों पर भी गरज रहा हूं कि तुमारा जी ही जानता है।

फू० मैं तुम दोनों पर नहीं हूं कि आपस ही में लड़ा रही हूं।

मू०—मत झगड़ो जब मैंने तुम दोनों को मूर्ख कर दिया है तो दोनों ऐसे ही हो।

(नेपथ्य में प्रताप के स्वर से अचानचक बाजे के साथ ठुमरी)

चकपकाइ सिरनाहिं डुले है को सुनि महिमा श्री रानी को।

(तीनों नेपथ्य की ओर अंगुली दिखला के) अरे प्रताप आता है हम लोगों को देखैगा पटनी कर डालैगा चलो चलो

(तीनों चले जाते हैं)

(पटीक्षेप—कम्पनी बाग़ प्रतापगारहा है)

सब दिन रहत जहां बहु गरमी सब दिन सीत

काल रितुनी की । जहां नदी बहु जहां सरवयस सो सब भूमि यहै याही की ॥ चपाकाइ० ॥ उत्तर ध्रुव वाहु ऊंचो दीखत सोभा उत्तर वाहू ससी को । सब दिन रात दिवस सम हैं काहुं तहं हूं जय धुनि है ताही की ॥ चक्रपकाइ० ॥ जलकों सुगम थलहिसो किनो समता थलहिं दई पानी की । सहसन कवि ताको जस बरनत बात कहां तहं इक सुकवी की ॥ चकपकाइ० ॥

नेप० में—(झोक से)

"आनन्द सो परजा विकासे सब"

प्रताप—(उधर देखकर स्वगत) वाह यह इधर लोग इकट्ठे होकर कविता पढ़ रहे हैं (प्रगट) हां हां मुझे देख डरिये मत आज भली भांति घूम कर के कविता पढ़िये।

नेप० में—(फिर उसी स्वर से) आनन्द सों परजा विकासे सब कों लसे कोस सिरी हरषानी। सेवकिनी चिरियां सम चारहुं ओर तें बोल रही मृदुबानी ॥ और प्रकास सो जाको प्रताप लखें इमि अम्बिकादत्त बखानी । पूरी असी की कटोरिया सो चिरजीवी रहो विकटोरिया रानी ।

प्रताप—वाह बहुत अच्छा और पढ़ो और

नेप० में—

भाषत जासु भनी जय की धुनि भूमि पयोधि उछारत पानी। घूमत जासु के राज्य विलोकत डीठि नहीं रविहू की थिरानी ॥ अम्बिकादत्त सबै मिलि क्यों नहिं ताकहं भाषि हैं आमिष बानी। पूरी अमी की कटोरिया सी चिरजीवी रहौ विकटोरिया रानी ॥

प्र०—अहा हाहा क्या लाख रुपये का कवित्त है! भाई एक और सुनाओ।

नेपथ्य में—

जोर सों जङ्ग के जुद्ध में जीति कै दूरि कियो जिहिं मिश्र को पानी। पञ्जा लराइ पछारि दियो जिहिं ब्रम्ह को देस सबै सुख खानी ॥ अम्बिकादत्त जू भारत भूमि तो खेलन हीं कर कंज में आनी। सो निज धाक की साक जमावति राज करो विकटोरिया रानी ॥

प्र०— हां हसे एक बार फिर।

नेप०में—(फिर वही कवित्त पढ़ा जाता है)

प्र०—भाई वाह क्या बात है! अच्छा अब दूसरी ओर की भी रचना देखूं कि राजभक्ति ने क्या क्या कर रक्खा है।

(जाता है)

(पटीक्षेप—स्थान-सजा हुआ कमरा-बीच में राजभक्ति औ इधर उधर दया तथा उदारता हाथ

पताके खड़ी हैं तीनों के कपड़े की भूषण चमचमा रहे हैं)

राजभक्ति—देखो आज हम लोगों ने भारतवर्ष को ओर का ओर कर डाला।

आजु फानूसन कीनों जगमग बहुदेस दिवाला।
बंगलभाषा कीरतिविधिपढ़ि गावत बैताला ॥
मधुर ब्रजभाषा मैं बहु बिधि रसभीनो गीतन गावत।
छोटो फुवारा छुटि छुटि के बीते घटा उड़ावत ॥
लखहुबिहारीभाशुभसजै बिबिधबिभावनराचत।
भेरी मधुर मृदङ्ग बजावत चुनिकों गावत नाचत ॥
पच्छिम उत्तर देस आज बहु सरस रोशनी छाई।
बन्दनवार बिचित्र लटकतीं फुंदन सों छहराई ॥
बाजि राजि सिङ्गारी राजत राजपुताने माहीं।
तोप धमाधम धूमधमाईं कान दिये नहिं जाहीं ॥
फर फर फर पचरङ्ग पताका गगन माहिं फहराई।
नगरबज़ारचमाचमकीने सोहनि कहि नहिं जाई ॥
लखहुपञ्चनदमांहि कवायद बहुबिध बीरनसाजी।
बांटे साल दुसाला दीनन होइ रहे सब राजी ॥
महाराष्ट्र मैं मरहट्टा सब बांधत तीखी पागन।
सभा जमाइ बजा ना करि गावत जय जय रागन ॥
मदरासी मन्दोल बांधि सेला झमकाये झूमत।
उड़िया कर्नाटी आदिहु सब आनंद माते झूमत ॥

उ०—ठीक है राजभक्ति आज तेरे ही उत्सव के कारण मैंने चन्दे के इतने रुपये इकट्ठे कर दिये हैं कि रानी के नाम पर न जाने कितनी धर्मशाला बनेंगी औ तलाव औ कूएँ बनेंगे।

द०—मैंने भी प्रति नगर कैदी छोड़े हैं औ दीनों को अन्न वस्त्र दिये हैं।

नेपथ्य में—(तानपूरे के साथ संस्कृत स्तोत्र)—

मत्वेव भारतीयं, धीरैर्वीरैरसनाथितं वीरम् ।
श्रिदसादधारराज्ञी,प्राप्तासा विजयिनीजयंलभताम् ॥
लब्ध्वापि विविधराज्यं, तुष्टाऽभूद्भारतेश्वरी पदतः ।
सा भूतभारत भावा, भाराजितराजमण्डलाजयतु ॥

रा०भ०—यह इधर सुनो; प्राकृत की कविता बनवाई है।

नेपथ्य में—(प्राकृत)

णिजरज्जवज्जसज्जा, धम्माधम्मारम्भिअचक्कवचिरम्
चिट्ठदु धम्मामग्गा, अम्हा रण्णो इसे दिवसन्तीकु ॥

उ०—वाह क्या प्राकृत भाषा में कविता है।

रा०—(नेपथ्य की ओर देख कर) अब सुनो बङ्गभाषा की कविता सुनो।

नेपथ्य में—(बङ्गभाषा)—

उड़िल पताका आज, उच्छल मङ्गल ।
बाजिल दुन्दुभि आज, आनन्द सकल ॥
गगने भङ्कर नाद, उपल विस्तीर्ण ।

पुष्पेर वृष्टिते भूमि, हइल आकीर्ण ॥
अनन्दे मातिया सब नाचे जत लोक ।
देखिना काहारो मुखे लेशमात्र शोक ॥
सब भाई सबे मिलि आनन्द हृदय ।
हांक भारतेश्वरीर जय जय जय ॥

रा०भ०—वाह अच्छा अब तिरहुता।

नै०—आजु मोद बड़ भेल रे ।
सोक हमर सब गेल रे ॥
धाम धाम भेल नाच रे ।
जयतिजयति धुनि मांच रे ॥
सबहि बिसाल काज रे ।
सुरल प्रजा महाराज रे ॥
सौ से दीपक पांति रे ।
कि काहब भेल बहु भांति रे ॥

रा०भ०—आहा हा हा। अच्छा अब रामगढ़ चूरू की भाषा।

नै०—ठाँठाँकी कहां कहांणी नगर सटेटा साझा छैं।
टाबर बूढ़ा व्याह्या व्याहासगला आनन्द भाषा छैं।
डूगर ढीबा नन्दी नाला, आज दिवाली छाया छैं।
लोग लुगाई राजा रावल सगला आज उमाया छैं।

सब—आहा यह भी कैसी मीठी भाषा है।

नै०—(खड़ी बोली)
भारत निवासी लोग सब रानी की जय कही ।

गाओ बजाओ औ असीस देते सब रहो ॥
फूलों की बर्षा कर के सभी रोसनी करो ।
जै जै की धुन मचा के दस दिसाओं को भरो ॥

रा० भ०—यह देखो खड़ी बोली की कविता है। (ठहर के) अब कविताओं का तो अन्त नहीं है। इस में हम लोग कहां तक उलझैं चलो शिक्षा, उत्साह आदि से मिलैं।

सब०—हां हां।

(सब जाती हैं)

(पटीक्षेप—उत्साह, शिक्षा औ एकता नृत्य बेष से खड़े हैं।)

उ०—वे लोग न आईं ?

शिल्प—(नेपथ्य की ओर देख के ताली बजा कर इधर इधर।)

(राजभक्ति, दया औ उदारता भी नृत्य बेष से आती हैं) (उत्साह को बीच में कर रासमण्डल की भांति नाचती हैं फिर दो दो हाथ जोड़ औ और भी अनेक कला दिखला कर नाचती हैं) (नेपथ्य में गीत होता है ये सब गीत की लय के साथ नाच रही हैं)

(होरी काफ़ी)

जुबिली रङ्ग में हम मस्त भये हैं यार। जुबिली०।

भूले सब संसार । जुबिली० ॥ टिक्कस के दुख भूलि गये सब भारत दीप कतार । जय रानी की जय रानी की भाषत डगर गभार । जुबिली० ॥ भौंह नचाय लियौ जिहिं भारत बर्मा कछु ललकार । ऐसे ब्रिटिश सिंह सों को नहिं गिरिहै खाइ पछार । जुबिली० ॥ दूरिहि सों हम नमत रमा को रहहु जाहु कै पार । पै सब मिलि जय जय रानी की बोलत क्यों न गंवार । जुबिली० ॥ सुकबि कुकबि हम कोउ न जानत परि उत्सव के बार । सोई सुकबि जो होरी गावै जै जै कहि दै तार । जुबिली० ॥ (धूमधाम से जय ध्वनि होती है) उत्साहादि सब उसी ओर जाते हैं)

(पटीक्षेप—सानन्द भारत औ भारत सौभाग्य खड़े हैं) (इतने ही में दोनों पताका दोनों ओर से आ कर खड़ी हो जाती हैं ।)

भा० सौ०—कहो भारत क्या चाहते हो ?

भारत—यही कि (श्लोक)—

राजानः प्रभवन्तु नीति निपुणाविप्राश्च विद्यायुताः,
सद्व्यापार समन्वितावपिविशः शूद्रा द्विजा सेवकाः ।
लज्जाशील विभूषिता युवतयो भूमिश्च शस्यान्विता
ईर्षा रुष्ट विवर्जिता अपि जनाः सर्वे भवन्तुस्थितौ ॥

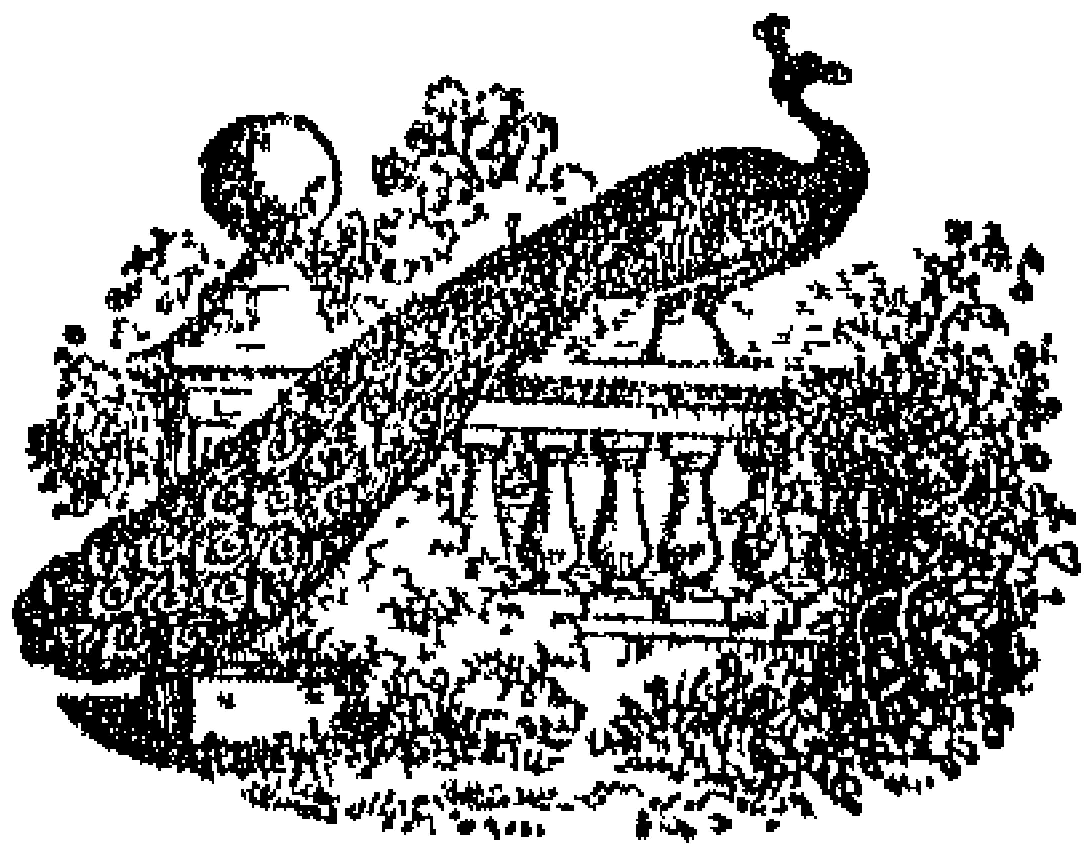
भा० सौ०—तथाऽस्तु

(इतने में फूल उछालते प्रताप उत्साह राजभक्ति आदि आते हैं औ सब एक स्वर से श्लोक कहते हैं)

मित्रेषुप्रीतियुक्ता भयविनययुता राजवर्गे च सर्वे,
सोद्योगाद्रव्यविद्यार्जन विधिरचने वैश्यकाश्च धर्मे ।
स्वस्त्रीवर्गे स कामाः परनर युवती शीलतामाचरन्तः,
सत्कार्यामूल मार्याभगवति सुचिरंभक्तिभाजो भवन्तु ॥

(जय ध्वनि के साथ जवनिका गिरती है)

समाप्त ।



शुद्धिपत्र ।

शीघ्रता के कारण इस ग्रन्थ में बहुत अशुद्धि रहगई हैं; यद्यपि हम इस शुद्धिपत्र द्वारा कुछ संशय मिटा देते हैं तथापि और च्युतियों के लिये सज्जन लोग क्षमा करें ।

पृष्ठ	पंक्ति	इसे	यों मानों
१	७	हु … …	हू
१	८	क्षीं … …	क्षिं
१	१२	समाजि… …	सामाजि…
२	१६	दर दर …	दादा
२	२०	है … …	हैं
२	२२	है … …	हैं
३	१०	कुशल: …	कुशल ?
३	२२	है … …	हूँ
४	१	टा … …	टो
५	८	* … …	*
५	२०	को … …	थी
६	८	कार शिक्षा …	कर) शिक्षा
७	१	हूँ … …	हुँ
७	१७	। … …	?
८	६	नहीं … …	फिरती है
८	८	! … …	?

* क्यों के पहले आवरण (ब्राकिट) में चाहिये ।

पृष्ठ	पंक्ति	इसे	यों आनी
८	१६	मुझे	तुझे
९	१	नेपथ्य ...	नेपथ्य में
९	१	(Gol:— ...	(हार्मोनियम के साथ संगीत होता है)
९	८	*	*
१०	२१	स्त्री वेष ...	स्त्री वेष
११	१०	नी	ने
११	१०	हाा	हा
१३	७	भा...... है...	(भा........ है)
१३	२२	की	को
१५	७	टा	टी
१५	८	†	†
१५	१२	आंखें राजभक्ति	राजभक्ति आंखें
१५	१४	पच्छा	यच्छा
१५	१५	दि	दी
१५	१५	प क्व	पक्व
१५	१५	गा	था—
१५	१९	उठ कर आज्ञा	उठकर) आज्ञा

*यह समस्त सङ्गीत " " इस चिन्ह के भीतर चाहिये।

† ये तीनों पंक्ति (   ) इस चिन्ह में चाहिये।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	यों मानो ।
१७	८	हि … …	ही
१८	११	लो … …	लि
१८	१४	Britaning…	In
१८	१४	See … …	Sees
१८	११	एक सा …	एकसा
१८	१५	डालते …	डालते थे
१८	२०	जो … …	जो
२०	१	उप … …	इप
२१	७	दर्श … …	दरस
२१	६	आपम …	आपम्
२१	१८	हो … …	हूँ
२१	२०	की … …	हिं
२१	२०	कों … …	कों
२२	४	हि … …	ही
२२	८	मतता… …	ममता
२३	१८	जु … …	ज
२५	६	पटा … …	परी
२५	१०	को … …	की
२६	७	क्षत्रिय …	क्षत्रिय ?
२७	३	हु … …	हूं
२७	२२	रि … …	री

पृष्ठ	पंक्ति	छपी	ऐसी मानो
२८	७	खखहु ...	खखगु
२८	८	चहुं	चहूं
२८	१०	कौ	दौ
२८	१५	हैं	हैं)
२९	१२	है	है
२९	१३	है	है
२९	१५	तिछि	तिछिं
२९	१६	है	है
२९	२०	कों	सो
२९	२०	करन	करत
३०	१३	।)	।
३०	१५	मानों ...	जैसे
३२	१०	बगाना ...	रंगना
३२	१२	हां	हा
३२	१९	पीस	पीठ
३३	१०	आपरको ...	अपुसर का
३५	१५	नेपथ्य ...	(नेपथ्य
३५	१९	वज	थाह
३७	२०	जिदारे ...	विदारे
४०	६	किनों ...	कोनों
४०	९	सें	से सवैया

IMPERIAL LIBRARY